रेलमंत्री बनने के बाद आज पहली बार जोधपुर आ रहे अश्विनी वैष्णव • पिता दाऊलाल वैष्णव ने बताए उनके बचपन से बड़प्पन तक के किस्से

'जो प्राप्त है, वो ही पर्याप्त है, मैंने अपने बेटे को यही सीख दी'

दाऊलाल वैष्णव

मैं ने बच्चों को हमेशा पाठ पढ़ाया कि जो प्राप्त है वो ही पर्याप्त है। खुशी है कि उन्होंने इसे कभी नहीं छोड़ा। मैंने जो संस्कार दिए, अश्विनी ने हमेशा अपनाया। रेलमंत्री अश्विनी वैष्णव के पिता दाऊलाल वैष्णव ने बेटे से जुड़े कई किस्से दैनिक भास्कर संग साझा किए। उन्होंने कहा कि अश्विनी जब साढ़े चार वर्ष का था तब मैं उसे जोधपुर लाया था। मेरे पिता ने कहा कि एक पोते को तो मेरे पास छोड़ दो लेकिन मैंने पहली बार पिता को मना किया। अश्विनी को जोधपुर ले आया और आज उसने अपने आप को साबित कर दिया। उन्होंने कुछ किस्सों के माध्यम से अश्विनी वैष्णव के जीवन को समझाया।

दाऊलाल वैष्णव

(जैसा दैनिक भास्कर के मनोज कुमार पुरोहित को बताया)

• जब पढ़ते थे...

नतीजा बाद में आया, इनाम पहले ही दिलाना पड़ा क्योंकि भरोसा था नंबर अच्छे ही आएंगे

अश्विनी को टीवी का शौक था। लेकिन पढ़ाई खराब न हो, इसीलिए घर में टीवी नहीं था। मैंने कहा था 10वीं में अच्छे नंबर लाओगे तो टीवी दिलाऊंगा। परीक्षा के बाद उसने दावा किया कि नंबर अच्छे ही आएंगे, आप टीवी दिलाओ। मैंने गर्मी की छुट्टी में ही टीवी दिला दिया, ताकि शौक पूरा हो जाए और फिर ठीक से पढ़ाई कर सके। अश्विनी देर रात तक पढ़ता था। सुबह उठने में देरी होती तो नाश्ता भी जल्दबाजी में होता था। नाश्ते के साथ जब वह जूते पहनता था और लेस बांधता था तो उसकी मां कई बार उसे टोकती थी। लेकिन वह हंस कर टाल देता था। मां के हाथ की गट्टे की सब्जी और कढ़ी उसे सबसे ज्यादा पसंद है। एक दिन यही बना हुआ था। पूरे परिवार के पास खाने का निमंत्रण था लेकिन वह हमारे साथ खाने पर नहीं गया।

• जब कलेक्टर थे...

मंदिर जाने का बोल चुपके से देखने कोर्ट में गए, कहीं बेटे में अहंकार तो नहीं आ गया

अश्विनी कटक कलेक्टर था, मैं भी वहां गया हुआ था। उसने कहा कि आज कोर्ट डे है, आप भी चलो। मैंने मना कर दिया और वह निकल गया। बाद में चुपचाप रिक्शे से कलेक्ट्रेट चला गया। मैं देखना चाहता कि अश्विनी में अहंकार तो नहीं आया? उसने जैसे ही मुझे वहां देखा तो वह उठ कर मेरी ओर आ गया और मेरे पैर छू कर कहा- मुझे पता था पिताजी कि आप आएंगे। बात अक्टूबर 1999 की है। जब उड़ीसा में सुपर साइक्लोन आया था। सैकड़ों लोगों की मौते हो गई। अश्विनी की पोस्टिंग बालासोर में थी। फोन पर बात हुई तो उसने कहा कि पता नहीं कौन बचेगा और कौन नहीं? मैंने कहा कोई बात नहीं पीड़ित मानवता की सेवा करो। वहां लोगों के पास खाने को अन्न नहीं था। अश्विनी ने वहां के भंडार खोलकर लोगों में निशुल्क अन्न बंटवाना शुरू कर दिया।

• जब पीएमओ में थे...

पहली गाड़ी खरीदने के लिए 3.5 लाख रुपए का डीडी जोधपुर से भेजा था

प्रतिनियुक्ति पर 2003 में पीएमओ भेजा गया। उसने मुझे फोन किया कि सरकार से कार मिली है, लेकिन इसका उपयोग एक माह तक कर सकेगा। मैंने कहा कि चिंता मत करो। मैंने गाड़ी खरीदने के लिए 3.5 लाख का डीडी भेजा। तब उसने पहली गाड़ी खरीदी। स्कूटर की बात सुनिए। अश्विनी का प्रवेश एमबीएम कॉलेज में हुआ तब तक साइकिल चलाता था। ट्यूशन जाना पड़ता, लेकिन कभी स्कूटर नहीं मांगा। एक बार मां से कह रहा था कि मैं साइकिल चलाते-चलाते थक जाता हूं। मैंने सुन लिया और उसी दिन उसे स्कूटर दिलाया, ताकि वह बिना थके पढ़ाई कर सके।

अश्विनी वैष्णव